International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 377-378

'गोदान' की धनिया : एक अवलोकन

डॉ० पूनम काजल
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, हिन्दू कन्या महाविद्यालय, जींद, हरियाणा, भारत।

सारांश
हिन्दी कथा–साहित्य की परम्परा में मुंशी प्रेमचन्द की भूमिका युगान्तरकारी रही है। उन्होंने अपने उपन्यासों में दलित, शोषित और उत्पीड़ित मनुष्यता की व्यथा–कथा को पूरे नैतिक बल के साथ सशक्त अभिव्यक्ति दी है। गरीब, किसान, मजदूर और नारी–प्रेमचन्द की गहन् मानवीय संवेदना के प्रमुख आकर्षण रहे हैं। उनका उपन्यास 'गोदान' कृषक संस्कृति का ऐसा महाकाव्य है जिसमें भारतीय किसान की त्रासद स्थितियों के साथ–साथ तत्कालीन युग की अनेक सामाजिक जटिलताओं का भी बखूबी उद्घाटन किया गया है। जितनी शिद्दत के साथ उन्होंने तत्कालीन समाज की विद्रूपताओं को दर्शाया है, उतनी ही सूक्ष्म दृष्टि से नारी की व्यथा व संघर्ष को भी वाणी प्रदान की है। अपने इस उपन्यास में उन्होंने नारी को सीमित क्षेत्र की सीमाओं से निकाल कर अधिक विस्तृत भावभूमि पर खड़ा किया है।

मुख्य शब्द : शिद्दत, वाक्–शक्ति, कुत्सित, विषाक्त, प्रदत्त, भावभूमि।

प्रस्तावना

'गोदान' उपन्यास के अशिक्षित नारी–पात्रों में धनिया एक ऐसी नारी है, जो उपन्यास का प्राण है। उसके व्यक्तित्व की निर्मिति तो मानो विद्रोह के ताने–बाने से ही हुई है। उसकी अद्भुत वाक्–शक्ति से होरी ही नहीं, पूरा गाँव काँपता है। अन्याय के प्रति विद्रोह का स्वर ही उसके चरित्र की सर्वप्रमुख विशेषता है। उसने अपने ऊपर आने वाली विपत्तियों को होरी की भाँति देव प्रदत्त मानकर चुप रहना नहीं सीखा है। वह एक ऐसी कर्मठ नारी है जो धर के उत्तरदायित्व से लेकर पंचायत में जवाबदेही तक सभी कार्यों में होरी के कदम–से–कदम मिलाकर चलती है। होरी के भाग्य–क्षितिज पर छाए हुए विपत्तियों के बादलों को वह अपनी अदम्य शक्ति द्वारा हटाती चलती है। धर्म, समाज, गृहस्थी, अदालत आदि प्रत्येक क्षेत्र में धनिया सच्ची और उपयुक्त जीवन–संगिनी बनने का प्रमाण देती है।[1]

धनिया सच्चे अर्थो में पति की सहगामिनी है, लेकिन गलत बात पर वह पति तक का विरोध करने से पीछे नहीं हटती। साहूकारों को सूद देने के मामले में, थानेदारों को रिश्वत देने के मामले में, बिरादरी में डाँड देने के मामले में और भाइयों के व्यवहार के मामले में–प्रत्येक गलत बात पर धनिया का होरी से विरोध है। एक बार हीरा से लड़ाई–झगड़े के दौरान लाला पटेश्वरीलाल के बीच–बचाव करने पर वह उन्हें मुँह तोड़ जवाब दिए बिना नहीं रहती– "अच्छा! रहने दो लाला। मैं सबको पहचानती हूँ। इस गाँव में रहते बीस साल हो गए। एक–एक की नस–नस पहचानती हूँ..... ।"[2]

विपरीत परिस्थितियों में भी विद्रोह का सामर्थ्य धनिया में विद्यमान है। भाई की झूठी इज्जत बचाने हेतु होरी का दारोगा के सामने झूठ बोलना धनिया के लिए कदापि सहनीय नहीं है। वह अपनी एक ललकार से महाजन और दारोगा का मुँह बंद करके आस–पास के लोगों में एक मिसाल कायम कर देती है। दारोगा को घूस देने के मौके पर वह दारोगा समेत गाँव के सभी तथाकथित चौधरियों को धिक्कारती है– "मैं एक दमड़ी न दूँगी ..... मैं सब जानती हूँ। यहाँ तो बाँट–बखरा होने वाला था, सभी के मुँह मीठे होते। ये हत्यारे गाँव के मुखिया हैं, गरीबों का खून चूसने वाले।"[3]

वस्तुतः यहाँ प्रेमचन्द ने धनिया द्वारा समाज के उन कुटिल लोगों के मुँह पर तमाचा मारा है जो समाज को अपने कुत्सित व्यवहार द्वारा विषाक्त करने पर तुले हुए हैं। यह भी सत्य है कि अन्यायी का विरोध करने में धनिया अपने–पराए के भेदभाव से ऊपर उठी हुई है। समस्त दुराग्रहों से मुक्त हो कर वह अपने पुत्र द्वारा झुनिया पर किए गए अन्याय का विरोध करने से भी पीछे नहीं हटती। झुनिया की रक्षा के लिए वह भोला महतो के साथ–साथ पूरे समाज से टक्कर लेती है। झुनिया को आश्रय देने के मूल में अपने पुत्र के पाप का प्रायश्चित करने का भाव भी निहित है। सच तो यह है कि झुनिया को अपने घर में आश्रय देकर वह अपने नैतिक साहस का परिचय देती हुई विषम सामाजिक परिस्थितियों के विरूद्ध विद्रोह जताती है। इसी कारण वह सामाजिक अपवाद का कारण बनती है, लेकिन अपने दृढ़ साहस के बल पर ही वह अपने पुत्र के असामाजिक प्रेम को अपमानित होने से बचा लेती है। दातादीन के यह कहने पर कि 'तुम्हें इस दुष्टा को घर में न रखना चाहिए था', वह मुँह तोड़ जवाब देती हुई कहती है– "हमको कुल–परतिसठा इतनी प्यारी नहीं है महाराज, कि उसके पीछे एक जीव की हत्या कर डालते। ब्याहता न सही, पर उसकी बाँह तो पकड़ी है मेरे बेटे ने। किस मुँह से निकाल देती? वही काम बड़े–बड़े कहते हैं, मुदा उनसे कोई नहीं बोलता, उन्हें कलंक ही नहीं लगता..... ।"[4]

धनिया के इस कथन में हमें हिन्दू समाज की विषमता पर तीखा व्यंग्य देखने को मिलता है। वर्ग–संघर्ष की भावना भी यहाँ तीव्र रूप में दृष्टिगोचर होती है। वह दातादीन पर करारा व्यंग्य करते हुए उसे इस बात का बोध करा देना चाहती है कि तुम्हारे लड़के मातादीन के भी एक चमारिन के साथ सम्बन्ध हैं। धनिया की इसी स्पष्टवादिता के कारण ही दातादीन पंचों के साथ मिलकर होरी पर सौ रुपए नकद और तीस मन अनाज का जुर्माना लगवा देता है। जहाँ होरी पंचों को परमेश्वर का दर्जा देकर उनकी प्रत्येक अमानवीय बात को आँख मूंद कर सहन करता जाता है, वहीं धनिया नियम या कानून किसी की परवाह न करती हुई पंचो के अमानवीय न्याय के लिए उन्हें धिक्कारती है– "पंचों, गरीब को सता कर सुख न पाओगे, इतना समझ लेना। ..... मेरा सराप तुमको

जरूर लगेगा..... यही न्याय है? ..... मैं एक दाना न अनाज दूँगी, न कौड़ी डाँड। ..... हमें नहीं रहना है बिरादरी में..... ।[5]

जहाँ होरी बिरादरी से पृथक् जीवन की कोई कल्पना ही न कर सकता था, वहीं धनिया बिरादरी को अपने जूते की नोक पर रखती है। पोते के जन्मोत्सव पर वह बिरादरी से बहिष्कृत होने पर भी समूचे गाँव को सुनाने के लिए गला फाड़–फाड़कर सोहर गाती है। उसका मानना है कि 'अगर बिरादरी को उसकी परवा नहीं है, तो वह भी बिरादरी की परवा नहीं करती।'[6] वास्तव में मानवतावादी दृष्टिकोण से सम्पन्न होने के कारण उसकी सहानुभूति सदैव शोषितों के साथ है। वह जिस उदारता, निर्भयता और स्नेह से निराश्रिता सिलिया चमारिन को आश्रय देती है, वह उसके उदार मातृत्व और नारीत्व का भव्यतम रूप है। मातादीन और चमारों की बिरादरी द्वारा बहिष्कृत सिलिया को आगे बढ़कर थामने वाली धनिया ही है जो दयार्द्र हो कर कहती है – "जगह की कौन कमी है बेटी ! तू चल मेरे घर रह।"[7]

यहाँ भी समाज और बिरादरी का डर होरी को बेचैन किए रहता है, लेकिन धनिया को न तो बिरादरी का डर है और न धर्म का – "बिगड़ेंगे तो एक रोटी बेसी खा लेंगे, और क्या करेंगे। कोई उनकी दबैल हूँ ..... ।[8] वस्तुतः सिलिया को अपने घर में आश्रय देकर धनिया उदात्त मानव–प्रेम का सन्देश देती प्रतीत होती है। सत्य तो यह है कि धनिया आत्मविश्वास और स्वाभिमान की पुतली है। उसका आत्मसम्मान केवल उसी का नहीं है, अपितु समस्त नारी जाति के लिए है। जीवन–भर दाने–दाने को तरसते रहने पर भी उसने किसी के आगे सिर झुकाना नहीं सीखा। डाँड के रुपए चुकाते–चुकाते होरी की हालत बद से बदतर होती जाती है और उसके समस्त परिवार को दातादीन के खेतों में मजदूर की हैसियत से काम करने को विवश होना पड़ता है, लेकिन इससे धनिया के स्वाभिमान और आत्म–विश्वास में रत्ती–भर भी फर्क नहीं पड़ता। अपने अदम्य साहस के बल पर वह अनेक बार गाँव भर का नेतृत्व करती हुई दीख पड़ती है। प्रेमचन्द होरी के मुख से कहलवाते हैं – "..... उसकी नाक बड़ी लम्बी है। चाहे मिट जाए, मरजाद न छोड़ेगी।"[9]

इस प्रकार धनिया के चरित्र की विभिन्न परतों को उपन्यासकार ने बड़ी सूक्ष्मता के साथ खोल कर पाठकों के सम्मुख रख दिया है।

उद्देश्य

यह नितान्त सत्य है कि धनिया अपनी सजीवता, तीव्रता एवं गहन व्यापकता की सर्वोत्कृष्टता के कारण अमर हो गई है। वह एक ऐसी भारतीय नारी की प्रतीक है जो आजीवन अधखाए और अर्धनग्न रह कर परिवार हित हेतु स्व–अस्तित्व का बलिदान कर देती है। उसका चरित्र पारिवारिक और सामाजिक संघर्षों के मध्य और भी अधिक निखर आया है। वास्तव में धनिया का संघर्ष केवल उसी का नहीं है, बल्कि समस्त निम्नवर्गीय भारतीय नारियों का है। शिक्षित न होने पर भी उसमें भविष्य को समझने की शक्ति है। उसकी सामाजिक चेतना व तटस्थ निर्णय शक्ति से ही उसके अस्तित्व को प्राणवत्ता मिली है।

निष्कर्ष

कुल मिलाकर जीवन के प्रत्येक रूप में धनिया ने परिस्थितियों से जूझने का भरसक प्रयास किया है और व्यक्तिगत क्षेत्र में तो वह उनसे कहीं ऊपर उठी हुई है। यही कारण है कि आरम्भ से लेकर अन्त तक वेदनाओं से भरे उसके चरित्र में एक प्राणवत्ता है जो किसी भी सहृदय पाठक की सहानुभूति को झकझोर देती है। वह कर्तव्य और विवेक–बुद्धि से सम्पन्न एक जागरूक नारी है। वस्तुतः धनिया, शोषकों, पाखंडियों, धूर्तों और रक्त चूसने वाले शोषकों के मुँह पर एक भरपूर तमाचा है। सत्य तो यह है कि धनिया के संघर्ष के माध्यम से प्रेमचन्द समाज की कुत्सित मनोवृत्तियों को सरेआम ललकारते हुए समस्त भारतीय नारियों की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

सन्दर्भ

1. डॉ. इन्द्रनाथ मदान, प्रेमचन्द प्रतिभा, पृ0 203
2. प्रेमचन्द, गोदान, पृ0 39
3. वही, पृ0 97
4. वही, पृ0 105
5. वही, पृ0 108
6. वही, पृ0 109
7. वही
8. वही, पृ0 211
9. वही, पृ0 290